# योग्य शिक्षक की निशानियां

हर कदम द्वारा अनेक आत्माओं को शिक्षा देना - यह है योग्य टीचर।

1 भाषण द्वारा व सप्ताह कोर्स द्वारा किसको शिक्ष. ा-स्वरूप बनाना।

2 ऐसे शिक्षक के हर बोल - वाक्य नहीं, लेकिन 'महावाक्य' कहे जाते हैं, क्योंकि हर बोल महान बनाने वाला है तो महावाक्य कहेंगे।

3 हर कर्म अनेकों को श्रेष्ठ बनाने का फल निकालने वाला हो। ऐसे शिक्षक का कर्म रूपी बीज फलदायक होगा, बीज अगर पावरफुल होता है तो फल भी इतना अच्छा निकलता है।

4 हर कर्म रूपी बीज फलदायक होगा, निष्फल नहीं। इसको कहा जाता है 'योग्य शिक्षक।

18.04.77

# प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न :

मीठे बाबा, टीचर्स को कौन सी एक 'लिफ्ट की गिफ्ट' मिली है?

उत्तर :

मीठे बच्चे,

1 टीचर्स बनना अर्थात् पुराने सम्बन्ध से त्याग करना। इस त्याग के भाग्य के लिफ्ट की गिफ्ट टीचर को है, पहले त्याग तो कर दिया ना।

2 पहला त्याग है सम्बन्ध का, वो तो कर लिया। आगे भी त्याग की लिफ्ट लम्बी है, लेकिन इस त्याग का, हिम्मत रखने का, सहयोगी बनने का संकल्प किया, यह 'लिफ्ट ही गिफ्ट' बन जाती है। लेकिन सम्पूर्ण त्याग कर दो तो बाप के लिए गिफ्ट, दुनिया के लिए लिफ्ट बन जाओ।

3 ऐसी लिफ्ट बन जाओ जो बैठा और पंहुचा, मेहनत नहीं करनी पड़े। टीचर्स को चान्स बहुत है, लेकिन लेने वाला लेवे। टीचर्स बनने के भाग्य का तो सब गायन करते हुए, इच्छा रखते हैं। टीचर्स जितना चाहे उतना अपना भविष्य सहज उज्वल बना सकती है।

18.04.77

# मन की बात... बापदादा के साथ

**मैं आत्मा :-**

प्यारे बाबा, स्वर्ग की सतोप्रधान, सम्पूर्ण प्राप्ति किन आत्माओं को प्राप्त होती है? और क्यों?

**बापदादा :-**

मीठे बच्चे,

•• डायरेक्ट बच्चे होने के कारण सृष्टि के आदिकाल सतयुग अर्थात् स्वर्ग की सतो प्रधान, सम्पूर्ण प्राप्ति आप आत्माओं को ही प्राप्त होती है, और सर्व आत्माएं आती ही मध्यकाल में हैं। आप श्रेष्ठ आत्माओं का भोगा हुआ सुख वा राज्य रजो प्रधान रूप में प्राप्त करते हैं। जैसे आप आत्माओं को धर्म और राज्य दोनों प्राप्ति हैं, लेकिन अन्य आत्माओं को धर्म है तो राज्य नहीं, राज्य है तो धर्म नहीं। क्योंकि द्वापर युग से धर्म और राज्य का दोनों पुर अलग-अलग हो जाते हैं।

18.04.77

18-1-77

अव्यक्त वाणी का मुख्य बिंदु

# स्मृति स्वरूप

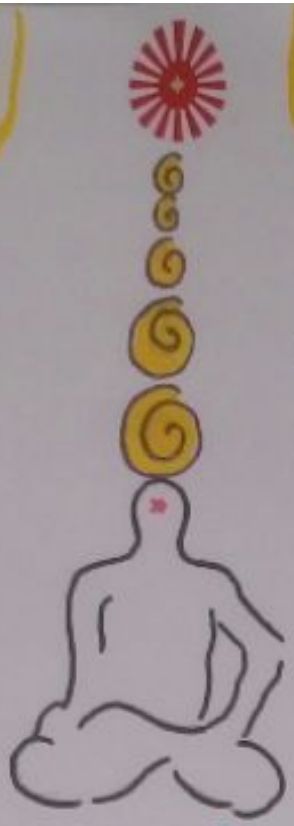

अमृतवेले से बापदादा ने विशेष मनुभवों के गोल्डन चांस की लॉटरी खोली है ऐसी लॉटरी लेने के अधिकार को मनुभव करना है

बापदादा के स्नेह में समाए हुए अर्थात् बाप समान बनने वाले स्नेह की निशानी है

# समानता

18-04-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

# मैं डायरेक्ट बाप की पहली रचना हूँ।

डायरेक्ट बाप की पहली रचना अर्थात् मात-पिता के सम्बन्ध से, अलौकिक जन्म और पालना को प्राप्त करने वाली। धर्म और राज्य दोनों को एक साथ प्राप्त करने वाली।

18-04-77

# योग्य शिक्षक का हर कर्म रूपी बीज फलदायक होगा निष्फल नहीं